SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नासिरा शर्मा की उपन्यासों में महिला वजूद

बंदना कुमारी, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
बंदना कुमारी, शोध छात्रा
E-mail : bandnakumari6656@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/05/2026
Revised on : 30/07/2026
Accepted on : 08/08/2026
Overall Similarity : 00% on 31/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 31, 2026 (07:32 AM)
Matches: 0 / 2014 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

स्त्री–विमर्श हिंदी कथा–साहित्य की प्रारंभिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाता है कि उनमें नारीवादी चेतना की ऐसी अंतधाराएँ मौजूद थीं, जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था की बेड़ियों को तोड़ने की आकांक्षा रखती थीं। पितृसत्ता, जिसने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ तक पूर्वी साहित्य पर सामंती व्यवस्था के अनुरूप गहरा प्रभुत्व बनाए रखा, उसने साहित्य में स्त्री–दृष्टिकोण के लिए बहुत कम स्थान छोड़ा।

मुख्य शब्द

उपन्यास, स्त्री–विमर्श, साहित्य, पितृसत्ता, नासिरा शर्मा.

प्रस्तावना

यह शोध–पत्र कुछ महिला उपन्यासकारों एवं नासिरा शर्मा के प्रयासों का अध्ययन करता है, जिन्होंने स्त्रीवादी प्रतिक्रियाओं के प्रति अपनी संवेदनशीलता और समर्थन व्यक्त किया। साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि हिंदी कथा–साहित्य धीरे–धीरे ऐसी चेतना से संपन्न हुआ, जिसने पुरुष–प्रधान सत्ता–संरचना को चुनौती देने का साहस किया। हिंदी कथा–साहित्य में महिला लेखिकाओं का उदय अपेक्षाकृत धीमा रहा। इसके विपरीत, उर्दू कथा–साहित्य में तरक्कीपसंद आंदोलन (प्रगतिशील आंदोलन) के समय से ही कई महिला लेखिकाएँ सक्रिय थीं। रशीद जहाँ जैसी लेखिकाओं ने पितृसत्तात्मक वर्चस्व के विरुद्ध विद्रोह करते हुए ऐसा साहित्य रचा जिसने महिलाओं में नई चेतना का संचार किया और पुरुष–प्रधान सत्ता को खुली चुनौती दी।

यदि पीछे मुड़कर देखें, तो हिंदी कथा–साहित्य में महिला लेखिकाओं का सशक्त उदय कुछ देर से हुआ। यद्यपि कृष्णा सोबती पहले ही एक महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में स्थापित हो चुकी थीं, फिर भी उनका लेखन रशीद जहाँ या इस्मत चुगताई की तरह प्रत्यक्ष विद्रोही नहीं था। समय के साथ हिंदी कथा–साहित्य में स्त्री लेखन का विस्तार हुआ और अनेक प्रमुख महिला लेखिकाएँ सामने आईं।

मन्नू भंडारी का उपन्यास महाभोज स्त्रीवादी प्रवृत्ति के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कृति माना जाता है। इस उपन्यास में उन्होंने गाँवों और उपगाँवों की पृष्ठभूमि में राजनीतिक षड्यंत्रों और सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है। कृष्णा अग्निहोत्री ने बानी परछाइयाँ तथा मैं अपराधी हूँ में महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अन्याय, शोषण तथा सामाजिक अपराधों पर तीखा प्रहार किया है। कृष्णा सोबती के जिंदगीनामा, यारों के यार और तीन पहाड़ जैसे उपन्यास स्त्री–अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों के साथ–साथ पंजाब के विभाजनकाल की त्रासदी को भी सामने लाते हैं। प्रभा खेतान ने पीली आँधी और छिन्नमस्ता में परंपराओं से बंधे मारवाड़ी समाज की रूढ़ियों और महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की आलोचना की है।

ममता कालिया ने बेघर और नरक दर नरक में महिलाओं की विवशता, संघर्ष और सामाजिक असुरक्षा का सशक्त चित्रण किया है। मेहरून्निसा परवेज ने बस्तर के ग्रामीण जीवन तथा भोपाल की संकरी गलियों में रहने वाली महिलाओं के जीवन–संघर्ष को अपनी रचनाओं आँखों की दहलीज और कोरजा में अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

नासिरा शर्मा ने अपनी समकालीन लेखिकाओं की तुलना में महिलाओं के प्रश्नों को अधिक प्रत्यक्ष और प्रभावशाली ढंग से उठाया है। उनके साहित्य के साथ हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श को एक नई दिशा और सार्थकता मिली। अपने व्यापक लेखन के माध्यम से उन्होंने स्त्री–संबंधी समस्याओं और चिंताओं को एक सशक्त विमर्श का रूप दिया, जिसके कारण उनकी तुलना विश्व की प्रमुख स्त्रीवादी लेखिकाओं से की जा सकती है।

उनके उपन्यासों की नायिकाएँ पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देती हैं। वे पुरुष–प्रधान समाज द्वारा थोपे गए रूढ़िगत, दमनकारी और असहनीय सामाजिक रीति–रिवाजों को स्वीकार करने से इंकार करती हैं। नासिरा शर्मा के अनुसार स्त्री–विमर्श आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण सामाजिक और वैचारिक उपलब्धि है। उन्होंने अपने पात्रों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और विद्रोह की चेतना का संचार किया है, जिससे वे समाज द्वारा महिलाओं पर किए गए पारंपरिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठा सकें।

नासिरा शर्मा ने स्त्री को केवल पत्नी, माँ या बहन के रूप में नहीं देखा, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अपने निर्णय स्वयं लेने और अपना भविष्य स्वयं निर्धारित करने में सक्षम है। उनके कहानी–संग्रह खुदा की वापसी तथा उपन्यास सरहद के पार और जीरो रोड ऐसी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जो बदलते सामाजिक परिवेश में आत्मनिर्भर, साहसी और नई चेतना से युक्त स्त्री की सशक्त छवि प्रस्तुत करती है।

परिवार एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसमें एक से अधिक व्यक्ति विवाह अथवा रक्त–संबंधों के आधार पर एक ही घर में साथ रहते हैं तथा पारस्परिक सहयोग, प्रेम और उत्तरदायित्व के माध्यम से परिवार की पहचान और व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना और स्वरूप में व्यापक बदलाव आए हैं। संयुक्त परिवार धीरे–धीरे एकल परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं और पारिवारिक संबंधों में विघटन की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

आज परिवारों के टूटने के प्रमुख कारणों में असफल वैवाहिक जीवन, स्त्री–पुरुष संबंधों में तनाव, निःसंतान दाम्पत्य, अलगाव, स्वार्थ, अहंकार तथा एकाधिकार की भावना प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में किया है। उनके पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पति–पत्नी के बीच अहं (Ego) का संघर्ष उनके संबंधों को तनावपूर्ण और विद्रोही बना देता है।

एक विकसित और सभ्य समाज की पहचान स्वस्थ पारिवारिक जीवन से होती है। परिवार की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई दाम्पत्य जीवन है। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए संयम, निष्ठा, लचीलापन, पारस्परिक सम्मान, प्रेम, विश्वास और सहयोग जैसे मूल्यों का होना आवश्यक है। आधुनिक औद्योगीकरण, व्यावसायिक जीवन की व्यस्तता तथा प्रतिस्पर्धा ने स्त्री–पुरुष संबंधों की प्रकृति में गहरा परिवर्तन ला दिया है इसलिए पारिवारिक संतुलन बनाए रखने के लिए पति–पत्नी के संबंधों में समानता, साझेदारी और सहयोग की भावना अनिवार्य है।

जब स्त्री–पुरुष संबंध स्वस्थ, सम्मानपूर्ण और परस्पर विश्वास पर आधारित होते हैं, तब वे जीवन को समृद्ध बनाते हैं। किंतु जब इन संबंधों में अविश्वास, अहंकार, संदेह और दमन की भावना प्रवेश कर जाती है, तब वैवाहिक संबंध टूटने लगते हैं और अंततः परिवार विघटन की ओर बढ़ जाता है।

नासिरा शर्मा ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'शाल्मली' में असफल दाम्पत्य जीवन का अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील चित्रण किया है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र नरेश और शाल्मली पति–पत्नी हैं। नरेश पुरुषवादी मानसिकता, अहंकार और संकीर्ण

सोच का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि शाल्मली आधुनिक शिक्षित होने के साथ–साथ भारतीय पारिवारिक मूल्यों में विश्वास रखने वाली नारी है।

शाल्मली की उच्च पद पर नियुक्ति और उसकी बढ़ती सामाजिक प्रतिष्ठा नरेश के पुरुष–अहं को आहत करती है। वह पत्नी की सफलता को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाता। शाल्मली अनेक कठिनाइयों और मानसिक पीड़ाओं को सहन करती रहती है, किंतु जब उसकी भावनाएँ और आत्मसम्मान निरंतर आहत होते हैं, तब उसके भीतर विद्रोह जन्म लेने लगता है।

नरेश बार–बार शाल्मली को यह अनुभव कराता है कि स्त्री केवल पुरुष के सुख का साधन है और उसकी स्वतंत्र पहचान का कोई महत्व नहीं है। वह उस पर अधिकार जताता है और उसकी स्वतंत्रता को सीमित करना चाहता है। शाल्मली का नौकरी करना, सम्मेलनों में भाग लेने के लिए दूर–दूर यात्रा करना नरेश को स्वीकार नहीं होता। वह कहता है सिर्फ इसलिए कि मैंने तुम्हें नौकरी करने की अनुमति दी है, इसका यह अर्थ नहीं कि तुम स्वयं को पूरी तरह स्वतंत्र समझने लगो।

यह कथन पुरुषवादी मानसिकता और स्त्री की स्वतंत्र पहचान के प्रति असहिष्णु दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। नासिरा शर्मा इस प्रसंग के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि पति–पत्नी जीवन–रूपी रथ के दो पहिए हैं। यदि उनमें से एक भी असंतुलित हो जाए या टूट जाए, तो दाम्पत्य जीवन अस्थिर हो जाता है। अतः वैवाहिक संबंधों को सफल बनाने के लिए दोनों पक्षों द्वारा समान रूप से प्रेम, विश्वास, सम्मान और सहयोग बनाए रखने का सतत प्रयास आवश्यक है। वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों के क्षरण, भौतिकवादी जीवनशैली तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों के कारण पारिवारिक और वैवाहिक संबंधों में अनेक प्रकार के परिवर्तन आए हैं। नासिरा शर्मा अपने उपन्यासों के माध्यम से इन परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण करते हुए यह संदेश देती हैं कि परिवार की स्थिरता और सुख के लिए परस्पर सम्मान, समानता और संवाद अत्यंत आवश्यक हैं।

महिलाओं की स्थिति और शैक्षिक संसाधनों की समस्याएँः नासिरा शर्मा के साहित्य के संदर्भ में

प्राचीन भारतीय समाज में नारी को सम्मान, गरिमा और शक्ति का प्रतीक माना जाता था। वैदिक काल में उसे शिक्षा, धर्म और सामाजिक जीवन में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे, किंतु समय के साथ सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण उसकी स्थिति में गिरावट आई। आधुनिक युग में यद्यपि महिलाओं ने शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, साहित्य, प्रशासन और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, फिर भी वे अनेक सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक समस्याओं से जूझ रही हैं। आज भी लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा, दहेज, बाल–विवाह, घरेलू हिंसा तथा सामाजिक असुरक्षा जैसी समस्याएँ महिलाओं के समग्र विकास में बाधक हैं।

महिला समस्याओं को साहित्य में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने का कार्य आधुनिक महिला लेखिकाओं ने किया है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और आत्मसम्मान के प्रश्नों को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास ''ठीकरे की मंगनी'' की नायिका महरूख स्त्री–जीवन की पीड़ा को समझते हुए कहती है कि स्त्री की समस्याएँ बहुत व्यापक हैं, किंतु उनका समाधान केवल भावुकता से नहीं, बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण, संवाद और आत्मविश्वास से संभव है। नासिरा शर्मा के अनुसार स्त्री को अपनी परिस्थितियों को समझते हुए स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा।

नासिरा शर्मा के साहित्य में विवाह, दहेज, सौंदर्य–बोध, विधवा जीवन, पारिवारिक उत्पीड़न और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। वे मानती हैं कि इन समस्याओं की जड़ में स्त्री की अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता और पितृसत्तात्मक मानसिकता प्रमुख कारण हैं इसलिए वे महिलाओं को शिक्षित, आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने पर विशेष बल देती हैं।

महिला शिक्षा और शैक्षिक संसाधनों की समस्या

शिक्षा ज्ञान का मूल स्रोत है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है, उसे तर्कशील बनाती है तथा सामाजिक कुरीतियों से मुक्त होने की शक्ति प्रदान करती है। महिलाओं के लिए शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता का आधार है। शिक्षा ने महिलाओं को अंधविश्वासों और रूढ़ियों से मुक्त कर उन्हें वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया है।

इसके बावजूद आज भी अनेक लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की कमी, आर्थिक अभाव, सुरक्षित परिवहन का अभाव, बाल–विवाह, दहेज की चिंता तथा परिवार की संकीर्ण सोच उनकी शिक्षा

में बाधा बनती है। कई परिवारों में लड़कियों की पढ़ाई से अधिक उनके विवाह को प्राथमिकता दी जाती है, जिसके कारण उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों और कहानियों में इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उनके पात्र यह स्पष्ट करते हैं कि जब कोई लड़की शिक्षा प्राप्त करना चाहती है, तब परिवार उसके भविष्य और विवाह की चिंता में उसकी शिक्षा को गौण मान लेता है। इस प्रकार सामाजिक मानसिकता और संसाधनों की कमी महिलाओं के शैक्षिक विकास में सबसे बड़ी बाधा बनती है।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में महिला–विमर्श केवल स्त्री की पीड़ा, शोषण और संघर्ष का चित्रण नहीं है, बल्कि उसकी चेतना, आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय–क्षमता तथा सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा का सशक्त दस्तावेज भी है। उनके स्त्री–पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था, धार्मिक रूढ़ियों, सामाजिक असमानताओं तथा आर्थिक निर्भरता जैसी चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करते हैं। नासिरा शर्मा स्त्री को केवल अधिकारों की मांग करने वाली नहीं, बल्कि परिवार, समाज और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने वाली संवेदनशील और विवेकशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

उनके उपन्यासों का महिला–विमर्श, भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है, जिसमें स्त्री–मुक्ति का अर्थ परिवार या समाज से अलगाव नहीं, बल्कि समानता, सम्मान, आत्मनिर्णय और मानवीय गरिमा की स्थापना है। यही कारण है कि उनका साहित्य समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में स्त्री–अस्मिता, प्रतिरोध और सामाजिक न्याय के विमर्श को नई दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार नासिरा शर्मा के उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वर्तमान समाज में लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, नासिरा (1989) *शाल्मली.* किताब घर, नई दिल्ली।
2. शर्मा, नासिरा (1993) *ठीकरे की मंगनी.* किताब घर, नई दिल्ली।
3. शर्मा, नासिरा (1995) *सात नदियाँ एक समन्दर.* किताब घर, नई दिल्ली।
4. शर्मा, नासिरा (2008) *जीरो रोड.* किताब घर, नई दिल्ली।
5. शर्मा, नासिरा (2011) *पारिजात.* किताब घर, नई दिल्ली।
6. शर्मा, नासिरा (2014) *अक्षयवट.* किताब घर, नई दिल्ली।
7. सिंह, नामवर (2006) दूसरी परम्परा की खोज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. पाण्डेय, मैनेजर (2002) *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2004) *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास.* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।

****